''कृषि गौरक्ष्य वाणिज्य वैश्य कर्म स्वभावजं'' **– गीता अ. 18 श्लोक 44**

''अकर मुल बकर फाइनाहा सैयदुल बहाइमा।''अर्थात ! गाय की इज्जत करो, क्योंकि यह चौपायों का सरदार है। गाय का दूध, घी व मक्खन, शिफा (अमृत) है, गोश्त (मांस) बीमारीयों का कारण है।

–कुरान शरीफ पारा, 14 सकआ 7–15

गाय की इप्या करके एक समय में 20 व्यक्तियों को भोजन कराया जा सकता है, जबकि वही गाय पूरे जीवन काल में कम से कम 20000 लोगों का अमृत तुल्य दूध से तृप्ति प्रदान कर सकती है। गाय भारत की खेती का आधार ही नहीं, वह भारत की कामधेनु है।

– महर्षी दयानन्द सरस्वती

'मेरे विचार के अनुसार गौ रक्षा का सवाल स्वराज्य के प्रश्न से छोटा नहीं, कई बातों को मैं इन स्वराज्य के सवाल से भी बड़ा मानता हूँ। गाय लाखों करोड़ों भारतवासियों का भरण पोषण करनी वाली माता है। हिन्दुस्तान में गाय ही मनुष्य का सच्चा साथी एवं सबसे बड़ा आधार है। वह सिर्फ दूध ही नहीं देती बल्कि सारी खेती का आधार स्तम्भ है। वह भारत की कामधेनु है।

– महात्मा गांधी

हिन्दुस्तान किसानों का मुल्क है। खेती का शोध भी भारत में हुआ, गाय –बैलों की अच्छी हिफाजत पर हिन्दुस्तान की खेती निर्भर है। हिन्दुस्तानी सभ्यता का नाम ही गौ–सेवा है।

– आचार्य विनोबा भावे